शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

# हिंदी काव्य में आदिवासी जीवन दर्शन

डिम्पी बरगोहाँई

**शोध-सार :**

आदिवासी शब्द को लेकर आमजन के दिलोदिमाग में तरह-तरह की भावनाएँ जन्म लेती हैं। इन भावनाओं में कहीं नकारात्मक भाव होते हैं, तो कहीं सकारात्मक। लेकिन यह सच है कि प्रायः लोगों की भावनाएँ आदिवासी-जन की पीड़ा, संत्रास, दुख, तकलीफ आदि की ओर इंगित नहीं के बराबर करती हैं। भारत ही नहीं दुनिया के कोने-कोने में बसे आदिवासी समाज भूतकाल से लेकर वर्तमान तक अपनी अस्मिता को बनाए रखने के प्रयास में हैं, परंतु उनकी आवाज को वर्चस्वशाली वर्ग दबाकर रख देता है, क्योंकि जीवन की मूलभूत जरूरतों से जुड़ी कई सारे अनिवार्य संसाधनों पर उनका आधिपत्य है, एकाधिकार है। यद्यपि आज आदिवासी समाज के अधिकार और अस्मिता को लेकर लड़ाइयाँ कम लड़ी जा रही हैं, तथापि बहुत सारे आदिवासी-लेखक खुद अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं। आदिवासी कविता का सम्बन्ध आदिवासी समाज से है। आदिवासी काव्य साहित्य को गतिशीलता प्रदान करने का श्रेय आदिवासी समाज की उस जीवन दर्शन को दिया जा सकता है, जहाँ समूचे जनजाति की अस्मिता को चुनौती देनेवाले उन तमाम सिद्धांतों से मुठभेड़ किया जाता है।

**बीज-शब्द :** *आदिवासी, काव्य साहित्य, सकारात्मक, अस्मिता, वर्चस्वशाली, एकाधिकार, चुनौती, जीवन दर्शन*